झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

चंपा देवी

आठवीं पास चंपा देवी ने कभी सोचा भी नहीं था कि गांव में पीसीसी सड़क बनाने का काम उन्हें मिल जायेगा. झारखंड के रांची जिले के अड़की प्रखंड के ऊपर बालालोंग गांव के पंडाटोली की चंपा देवी इस सफलता से काफी उत्साहित हैं. उनके प्रयासों से गांव के बुजुर्गों को पेंशन मिलने लगा. कुछ परिवारों को राशन के लिए पीला कार्ड भी मिला है.

चंपा देवी ने पैक्स कार्यक्रम के तहत सामाजिक कार्यकर्ताओं की प्रेरणा पाकर वर्ष महिलाओं का एक संगठन बनाया– 'अंधकार विनाश महिला विकास समिति.' इसकी सचिव के रूप में चंपा देवी की सक्रियता के कारण गांव में विकास की नयी संभावनाएं पैदा हुईं. गांव की पगडंडी को पीसीसी सड़क बनाये जाने के रूप में यह संभावना साफ नजर आयी. गांव की महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा और विकास की ललक बढ़ी. यह भावना भी पैदा हुई कि आत्मनिर्भर होने तथा स्वयं प्रयास करने से ही सबका भला हो सकता है.

चंपा देवी कहती हैं कि अब तो खुद पर इतना भरोसा हो गया है कि जरूरत पड़ने पर बीडीओ–सीओ या किसी भी अधिकारी से मिलकर बात करने में कोई संकोच नहीं होता. महिलाओं के अंदर यह भावना भी जागृत हुई है कि उन्हें सरकार की विभिन्न विकास योजनाओं के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए. इन योजनाओं का लाभ उठाने और बिचौलियों की लूटखसोट से छुटकारा दिलाने के लिए भी महिलाएं कमर कस रही हैं. इन सफलताओं के पीछे चंपा देवी की पहलकदमी और अनवरत प्रयासों का मुख्य हाथ है.

अब चंपा देवी की कोशिश है कि गांव की अधिक–से–अधिक महिलाओं को अपने साथ जोड़कर विकास की राह में अग्रसर करे. चंपा देवी ने जब संगठन बनाना शुरू किया था, तब गांव के पुरूषों तथा परिवार के लोगों ने उत्साहित करने के बदले रोकने की ही कोशिश की थी. लेकिन अब गांव एवं परिवार के लोग भी समझ चुके हैं कि चंपा देवी के प्रयास पूरे गांव के सभी लोगों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं. यही कारण है कि अब सबका सहयोग मिल रहा है. चंपा चाहती हैं कि गांव में ही आयवृद्धि तथा स्वरोजगार के अवसर पैदा हों.

चंपा देवी, पंडाटोली, ऊपर बालालोंग,
अड़की, रांची (झारखंड)
संस्था– टीसीडीआर

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

गीता देवी

झारखंड के रांची जिले के अड़की प्रखंड के हेठ बालालोंग गांव के पहानटोली की 21 वर्षीय गीता देवी आज पूरे इलाके की महिलाओं के लिए प्रेरणा की स्रोत बन गयी हैं. पैक्स कार्यक्रम के तहत 'ग्रामीण महिला विकास समिति' से जुड़ने के बाद अन्य महिलाओं के साथ गीता देवी ने भी अपनी बेहद मामूली आय में थोड़ी बचत शुरू की. जल्द ही बड़ी पहलकदमी की आकांक्षा भी पैदा हो गयी.

गीता ने महसूस किया कि इतनी सीमित बचत के जरिये महिलाएं किसी बड़ी गतिविधि में सक्षम नहीं हो पा रहीं. लिहाजा संसाधन के किसी बड़े स्रोत की तलाश जरूरी थी. गीता देवी की नजर गांव के बालू घाट पर पड़ी. सैकड़ों ट्रक बालू प्रतिदिन उठाकर ले जायी जा रही थी. गांव के संसाधन का लाभ गांव को भी मिले, यह विचार मन में आया. अन्य महिलाओं से बात की. सब राजी हो गयीं. प्रति ट्रक तीस रूपये की रॉयल्टी तय करके इसकी वसूली शुरू कर दी गयी.

हालांकि यह आसान नहीं था. पुरूष समाज को महिलाओं की पहल रास नहीं आयी. पुरूषों ने बाधा डालने की कोशिश की. महिलाओं से पहले खुद बालू घाट पहुंचकर रॉयल्टी वसूलने का भी प्रयास किया गया. लेकिन संगठित हो चुकी महिलाओं ने गीता के नेतृत्व में पुरूषों के खिलाफ जमकर मोरचा संभाला. यहां तक कि महिलाओं ने बालूघाट के पास एक झोंपड़ी बना ली और सुबह होते ही वहां पहुंचकर खुद रॉयल्टी वसूलने का काम नियमित रूप से जारी रखा, ताकि पुरूषों की दखल न हो.

महिलाएं अब गांव के लोगों को यह समझाने की कोशिश कर रही हैं कि इस राशि का उपयोग किसी व्यक्तिगत हित में नहीं बल्कि पूरे गांव और पूरे समाज के हित में किया जायेगा. इस बात को अब धीरे–धीरे अन्य लोग भी समझने लगे हैं. अब पहले जैसी बाधा भी नहीं रही. इस सफलता से उत्साहित गीता देवी अब कोशिश कर रही है कि महिलाओं को अन्य विविध गतिविधियों से जोड़कर समग्र विकास की राह बनाये. गीता देवी छोटी बचत के जरिये स्वरोजगार के अवसर तलाशने और महाजन के चंगुल से सबको छुटकारा दिलाने की भी कोशिश कर रही हैं.

गीता देवी, पहानटोली, हेठ बालालोंग गांव
अड़की रांची (झारखंड)
संस्था– टीसीडीआर

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

अनूप देवी

झारखंड के देवघर जिले के देवीपुर प्रखंड के रामूडीह गांव की अनूप देवी की पहल ने पूरे क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ताओं और खासकर महिलाओं का हौसला बढ़ाया है.

अनूप देवी का सफर काफी रोमांचक है. 23 फरवरी 2003 को उसके गांव में 'विकल्प' के कार्यकर्ताओं ने एक बैठक करके स्वयं सहायता सूमह का गठन किया था. उस दिन उपस्थिति बही में अंगूठे का निशान लगाते वक्त अनूप देवी को अपनी निरक्षरता का आभास हुआ. उसी वक्त उन्होंने साक्षर होने का संकल्प लिया. कुछ ही दिनों में 'महिला नवनिर्माण स्वयं सहायता समूह' बन गया. अनूप देवी को अध्यक्ष चुन लिया गया. 14 सदस्यों के इस समूह ने छह माह तक आपसी बचत के बाद एक स्थानीय बैंक से चार हजार रूपये ऋण लेकर गतिविधियां तेज कीं.

मार्च 2004 में अनूप देवी ने पहली बार प्रखंड कार्यालय, देवीपुर जाकर बीडीओ को अपने समूह के कार्यों की जानकारी दी. उनसे मदद का भरोसा मिला तो अनूप देवी ने रामूहीह तथा भोजपुर पंचायत में गरीब महिलाओं को संगठन के सूत्र में पिरोते हुए 46 समूहों के गठन में शानदार सफलता पायी. 26 समूहों को बैंक खाता तथा 6 समूहों को बैंक ऋण दिलाया. अनूप देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने देवीपुर प्रखंड को भूख और कुपोषण से मुक्त करने का संकल्प लिया. इसके लिए प्रखंड कार्यालय के अधिकारियों से मिलकर विकास योजनाओं की जानकारी हासिल करने तथा गांव को उसका लाभ दिलाने की पहल शुरू हुई. अप्रैल 2004 में लगभग दस महिलाओं के साथ अनूप देवी ने बीडीओ से मिलकर मध्याह्न भोजन और समेकित बाल विकास (आंगनबाड़ी) योजना लागू करने की मांग की. बीडीओ ने कहा कि इस प्रखंड में ये योजनाएं लागू नहीं हैं. लेकिन अनूप देवी ने 'विकल्प' तथा 'नीड्स' के कार्यकर्ताओं से इस संबंध में जानकारी लेकर इन योजनाओं को लागू करने हेतु प्रशासन पर दबाव डाला. आंदोलन की धमकी दी. अंततः 27 नवंबर 2004 को उपायुक्त ने इसकी मंजूरी दे दी.

अब तो अनूप देवी के नेतृत्व में विकास और ग्रामीणों के हित की अनगिनत योजनाएं चल रही हैं. सबको उम्मीद है कि विकास होगा.

अनूप देवी, रामूडीह गांव, देवीपुर प्रखंड
जिला देवघर (झारखंड)
संस्था– नीड्स

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

पार्वती देवी

पार्वती ने जब होश संभाला, तब तक सिर से मां–पिता का साया उठ चुका था. भाई ने पाला, विवाह कराया. पढ़ाई का मौका ही नहीं मिला. पति एक गरीब किसान. खेती की मामूली आय में किसी तरह गुजारा चलाती पार्वती के जीवन में ढाई साल पहले बड़ा बदलाव आया. 'मानवी' के कार्यकर्ताओं ने उनके गांव में 'दुर्गा सखी शक्ति समूह' बनाया. पार्वती कोषाध्यक्ष बनीं और खुद बनाने लगी अपनी राह.

रोजगार के अभाव के कारण अधिकांश पुरूष अन्य राज्यों में पलायन कर जाते थे. महिलाएं आसपास के जंगल जाकर पत्ते लातीं और दोने, पत्तल बनाकर बेचतीं. इसी बीच एक घर में बच्चा बीमार पड़ा तो इलाज के लिए पैसे नहीं. महाजन ने कर्ज बदले जमीन की मांग कर दी. उसी रात बच्चा बगैर इलाज के मर गया. तब पार्वती देवी ने महिलाओं की बैठक करके अपनी मामूली बचत से ही कोष बनाना शुरू किया. बचत के पैसे से मूढ़ी भूंजकर बेचा गया. महाजन पर से निर्भरता कम होने लगी.

पार्वती देवी ने महिलाओं के चार समूहों को इकट्ठा करके 'लखी अनाज भंडार समूह' बनाया. जनवरी, फरवरी के महीने में जो किसान मजबूरी में महाजनों को अपना धान बेहद कम दर पर बेच देते थे, उसका भंडारण किया गया. उसका चावल बनाकर किसानों को ही उचित मूल्य पर उपलब्ध कराया गया. इससे महिलाओं की क्षमता काफी बढ़ गयी. यहां तक कि बजरमरा गांव में जंगली हाथी द्वारा बारह घरों को तोड़ दिया तो इन महिलाओं ने अपनी पहल से वहां जाकर हरेक परिवार को पांच किलो चावल की सहायता की. महिलाओं ने अपने अनाज भंडार से खुद खिचड़ी बनाकर बच्चों व गर्भवती महिलाओं को खिलाया. कुपोषण के शिकार बच्चों का इलाज कराया.

पार्वती देवी ने गांव के विकास की कोशिशें तेज कीं तो एहसास हुआ कि गांव में आंगनबाड़ी केंद्र नहीं है, मध्याह्न भोजन व मातृत्व योजना का लाभ नहीं मिलता. पार्वती ने अधिकारियों को आवेदन दिया. अंततः उनके गांव में आंगनबाड़ी को स्वीकृति मिल गयी. 40 वर्षीय पार्वती को खुद पर इतना भरोसा हो चुका है कि वह अपनी तथा अन्य महिलाओं की आय बढ़ाने की कोशिशें शुरू करना चाहती हैं.

पार्वती देवी, गायबथान गांव, प्रखंड जामा
जिला दुमका (झारखंड)
संस्था– मानवी

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

सविदा खातून

बचपन में ही शादी हो गयी थी सविदा की. आठ बच्चे हैं. पति ड्राइवर. बेहद कम आय में गुजारा चलाती सविदा ने संगठन से जुड़कर आत्मनिर्भर होने की ओर कदम बढ़ाये तो पति ने कहा कि हमारे घर से औरतें बाहर नहीं निकलतीं. सविदा ने कहा– जब घर में खाने को नहीं, तो घूंघट रखकर क्या करेंगे.

36 वर्षीय सविदा ने 'लोक जागृति केंद्र' के कार्यकर्ताओं के सहयोग से नारी शक्ति संगठन तथा सहारा समूह बनाया. शुरू हुई एक विकास यात्रा. सरकारी अस्पताल में डाक्टर गायब रहता था. उसके खिलाफ ऐसा अभियान चलाया कि उसे नियमित आने पर विवश होना पड़ा.

इसी बीच, गांव के मध्य विद्यालय के भवन हेतु 3.75 लाख की राशि आयी. हेडमास्टर ने घटिया निर्माण करके पैसे गड़पने की कोशिश की. तीन माह की छात्रवृति की राशि भी बंदरबांट का शिकार हुई. हेडमास्टर से पारिवारिक रिश्ते के बावजूद सविदा ने जबरदस्त अभियान चलाया. लगभग तीन माह तक स्कूल के बाहर धरना देकर घटिया निर्माण बंद करा दिया. बीडीओ से मिलकर छात्रवृति में घपले की शिकायत की. लेकिन भ्रष्टाचार रोकने के बदले सविदा खातून सहित चार महिलाओं तथा दो ग्रामीणों पर झूठा मुकदमा कर दिया गया. पुलिस ने डराने की कोशिश की. इधर सविदा खातून ने ऐलान कर दिया कि चाहे जिस भी जेल में जाना पड़े, विकास राशि की बंदरबांट नहीं होने देंगी. इसके बाद महिलाओं ने उपायुक्त को सारी बात बतायी तो झूठा केस हटा, स्कूल भवन का निर्माण भी अच्छी तरह हुआ.

इन सफलताओं से उत्साहित सविदा कहती हैं कि असली ताकत तो महिलाओं के पास है, बस, उसे पहचानने और काम में लाने की जरूरत है. सविदा बिलकुल निरक्षर थीं. संगठन से जुड़ने के बाद साक्षर होने की ठानी. अब अपना नाम लिख लेती हैं. सहारा महिला स्वयं सहायता समूह की सचिव के बतौर वह फिलहाल दस समूहों के संचालन का दायित्व संभाल रही हैं. महिलाओं की थोड़ी बचत से आत्मनिर्भर होने की भी कोशिश कर रही हैं. सविदा कहती हैं कि अभी मुर्गी तथा बकरी पालने का काम शुरू करके थोड़े पैसे हाथ में लेना चाहती हैं ताकि आगे और बड़े काम कर सके.

सविदा खातून, ग्राम घोठिया, प्रखंड बेंगाबाद
जिला गिरिडीह (झारखंड)
संस्था– लोक जागृति केंद्र

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

उमा देवी

बयालिस वर्षीय उमा देवी इंटर पास हैं. पति स्टेट बैंक चतरा में कार्यरत हैं. दो बेटे हैं. दोनों पढ़ाई कर रहे हैं. उमा देवी ने 'जन सेवा परिषद' से जुड़कर सामाजिक गतिविधियां प्रारंभ की तो सफलता मानो इंतजार ही कर रही हो. उन्होंने किरण महिला मंडल नामक समूह बनाकर महिलाओं को बचत के लिए प्रेरित किया. अपना कोष बना तो किसी भी जरूरत के मौके पर, बीमारी, दुर्घटना, शादी वगैरह के मौके पर काम आने लगा. महिलाओं के घरेलू विवादों में भी समूह की ओर से सुलह कराया जाने लगा.

नतीजा यह हुआ कि गांव के जो लोग पहले समूह के काम का मजाक उड़ाते थे, वही लोग अब सराहना करने लगे. अब तो उमा देवी को संगठन ने विस्तार का महत्वपूर्ण दायित्व सौंप दिया है. उमा देवी की एक बड़ी सफलता है शराबबंदी आंदोलन. महिलाओं ने जब शराब के गैलनों को बहाना शुरू किया तो बड़ा कोहराम मचा. महिलाओं ने लगातार पंद्रह दिनों तक शाम को छह बजे जुलूस निकालकर शराब बेचनेवालों को चेतावनी दी. प्रशासन को ज्ञापन दिये. गांव के लोग भी शराब न पीने की कसम खाने लगे. जो लोग घर के कपड़े, बरतन बेचकर शराब पीते थे और घर लौटकर बीबी–बच्चों से मारपीट करते थे, उन्हें भी शराब की खराबी समझ में आने लगी. अब गांव में शराब का चलन कम हो गया है. इससे लोगों की आर्थिक स्थिति भी सुधर रही है.

उमा देवी ने कई गांवों में साक्षरता अभियान चलाकर अनगिनत महिलाओं को साक्षर बनाया. पर्यावरण सुरक्षा समिति की उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने प्लास्टिक की थैलियों के दुष्प्रभाव के बारे में चेतना फैलायी. अब वहां लोग या तो खुद कपड़े का थैला लेकर खरीददारी करते हैं या फिर कागज के ठोंगे में सामान देने की मांग करते हैं. उमा देवी ने पर्यावरण जागरूकता के लिए गांव–गांव में अभियान चलाया, पेड़ काटने और रासायनिक खाद के उपयोग से होने वाले नुकसान की जानकारी दी. इन चीजों का भी काफी असर हो रहा है.

उमा कहती हैं कि जो महिलाएं अपने समय का सही उपयोग नहीं कर पातीं, उन्हें संगठन से जुड़कर खुद अपने विकास और गांव समाज की तरक्की की कोशिश करनी चाहिए.

उमा देवी, उजैना गांव, प्रखंड बरही
जिला हजारीबाग (झारखंड)
संस्था– जनसेवा परिषद

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

भतनी देवी

वर्ष 1998 में जब 'प्रयास' के कार्यकर्ताओं ने बरही के करियातपुर गांव में संगठन बनाया, तो कौन जानता था कि भतनी देवी इस कदर सक्रिय हो जायेंगी. भतनी के पति सरयू दास कोलकाता में बैंककर्मी थे. लगभग 13 वर्ष पहले उनकी मृत्यु के कारण सारा बोझ भतनी देवी के कंधे पर आ गया. गांव में ही कुछ काम करके खर्चा चलाती रहीं. बाद में बेटे को नौकरी मिल जाने से कुछ राहत मिली. लेकिन संगठन से जुड़ने के बाद तो भतनी देवी का तेजी से विकास होने लगा.

'दबाव' महिला समूह की अध्यक्ष के बतौर 48 वर्षीय भतनी देवी आज महिलाओं को बचत के जरिये स्वरोजगार से जोड़ने की दिशा में काफी सफलता दिखा चुकी हैं. जिन महिलाओं को पहले दस रुपया सैकड़ा की दर से महाजन को भारी सूद देना पड़ता था, वही महिलाएं अब अपनी बचत से बेहद मामूली सूद पर कर्ज लेने को स्वतंत्र हैं. खुद भतनी देवी ने भी महिला कोष से लगभग तीन साल पहले दस हजार रुपये ऋण लेकर मुर्गीपालन शुरू किया. 1200 रुपये महीने की आय होने लगी. भतनी देवी ऋण की राशि ब्याज सहित लौटा चुकी हैं. मुर्गीपालन का काम भी अच्छा चल रहा है.

भतनी देवी की सफलता से उत्साहित होकर समूह की अन्य महिलाएं भी स्वरोजगार से जुड़ने लगीं. किसी ने फल, सब्जी बेचना शुरू किया तो कोई मुर्गी–बकरी पालने लगी. भतनी देवी ने अपनी बेटी मीना को नवीं कक्षा तक पढ़ाया जबकि अब तक लड़कियों को इतना पढ़ाने का रिवाज नहीं था. भतनी देवी से प्रेरणा लेकर अन्य लोगों ने भी अपनी लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया. गांव के मंदिर में पहले दलितों को घुसने तक नहीं दिया जाता था. लेकिन महिला समूहों के प्रयास से ऐसा संभव हो पाया. हालांकि इसके लिए काफी झंझट हुई. पुलिस को भी हस्तक्षेप करना पड़ा.

भतनी ने शराबबंदी आंदोलन चलाया. जो पुरूष बाहर काम करने के बदले शराब पीना अपना हक समझते थे, उन्हें महिलाएं कह रही हैं कि आप घर में बैठ जायें, महिलाएं ही काम करके आपका पेट भर देंगी. अब तो भतनी देवी हर महिला को स्वयं सहायता समूह से जुड़कर अपने विकास का संदेश देती हैं.

भतनी देवी, बड़ाटांड, करियातपुर, प्रखंड बरही
जिला हजारीबाग (झारखंड)
संस्था– प्रयास

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

किरण देवी

चालीस वर्षीय किरण देवी ने खुद भले ही सातवीं तक ही शिक्षा प्राप्त की हो, अपने बच्चों को पढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी. उनका मानना है कि परिवार और गांव के विकास के लिए जरूरी है कि महिलाएं शिक्षित हों तथा अपने अधिकारों को जानें. हजारीबाग जिले के बरही स्थित तेली टोला की निवासी किरण देवी ने वर्ष 2002 में 'जन सेवा परिषद' से जुड़कर महिलाओं को संगठित करना शुरू किया तो जेठ ने जबरदस्त विरोध किया. पति और देवर ने साथ दिया. जेठ तो अब भी खुश नहीं.

लेकिन किरण ने एक बार विकास की राह बनाने का काम शुरू किया तो पीछे मुड़कर नहीं देखा. उन्होंने महसूस किया कि शराब के कारण गरीबों की दुर्दशा और बढ़ जाती है. किरण ने शराब के खिलाफ आवाज उठाने, महिलाओं को अधिकारों के प्रति जागरूक करने, कानूनी उपायों का सहारा लेने तथा जंगल बचाने का अभियान शुरू किया. महिलाओं के समूह बनाकर जंगलों की कटाई पर रोक लगा दी गयी. अगर कोई लकड़ी काटता तो महिलाएं उसे जब्त कर लेतीं. जुर्माना लेतीं. उस राशि को समूह तथा गांव के विकास में लगाया जाने लगा. इस तरह कई समूहों के पास अच्छी राशि इकट्ठा हो गयी. इसका उपयोग आपसी जरूरत के वक्त किया जाने लगा. स्वरोजगार हेतु भी इस राशि का उपयोग किया गया. किरण के नेतृत्व में महिला समूहों ने साक्षरता अभियान में भी पूरा सहयोग किया.

इन सफलताओं से किरण काफी खुश हैं. कहती हैं कि दुनिया में न तो कोई कुछ लेकर आया है और न ही कोई कुछ लेकर जायेगा. इसलिए जब तक हैं तब तक इस दुनिया को बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए.

किरण को अब अधिकारियों से महिलाओं के हक की बात करने में हिचक नहीं होती जबकि पहले इसकी हिम्मत तक नहीं होती थी. पहले जो अधिकारी महिलाओं की बातों को गंभीरता से नहीं लेते थे, वे भी अब सुनने व अमल के लिए विवश हो रहे हैं. ऐसा महिलाओं के संगठित प्रयासों, हक के संबंध में जानकारी व उस पर तार्किक तरीके से बात करने से ही संभव हुआ है. अब किरण देवी हर महिला को स्वरोजगार से जोड़ने की कोशिश कर रही हैं.

किरण देवी, तेलीटोला, बरही
जिला हजारीबाग (झारखंड)
संस्था– जन सेवा परिषद

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

जोदिका तिर्की

35वर्षीय जोदिका तिर्की ने एमए तक पढ़ाई की है तथा रांची जिले के नामकुम प्रखंड के पिंडारकोम गांव में रहती हैं. उन्हें शुरू से ही यह बात खल रही थी कि गांव में अशिक्षा है, लड़कियों की शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं देता. वर्ष 2000 से ही जोदिका अपनी पहलकदमी के जरिये गांव की लड़कियों को शिक्षित बनाने के अभियान में जुट गयीं.

वर्ष 2003 में विकास फाउंडेशन की पहल पर 'सोनपरी महिला समिति' का गठन हुआ तो जोदिका को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला. समूह की अध्यक्ष के बतौर आज उनके पास अनगिनत सफलताएं हैं. गांव की लगभग 150 महिलाओं में से 50 महिलाएं साक्षर हो चुकी हैं. इनमें से कुछ महिलाएं पहले से ही साक्षर थीं जबकि शेष को संगठन ने साक्षर बनाया. लड़कियों की शिक्षा के मामले में काफी काम किया गया है. जोदिका का मानना है कि गांव व परिवार के विकास के लिए महिलाओं की शिक्षा जरूरी है. गांव में शिक्षा के प्रसार के प्रयासों के ही कारण सर्वशिक्षा अभियान के तहत उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय बनाया गया. इसके अलावा गांव में पीसीसी सड़क बनवाने तथा बिजली लाने में भी जबरदस्त सफलता मिली. किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में बर्मी कंपोस्ट का काम सामूहिक रूप से शुरू किया गया. समूह ने बचत के जरिये राशि जुटाकर उसे बेहतर खेती में प्रयोग करना शुरू किया है. उन्नत बीज व खद के उपयोग से उत्पादन बढ़ रहा है. इससे कृषि उपज से होने वाली आय भी बढ़ रही है.

सामाजिक कार्यों से जुड़ने वाली अन्य महिलाओं की ही तरह जोदिका तिर्की को भी प्रारंभ में पुरुषों की बाधा का सामना करना पड़ा. लेकिन उनके कृषक पति अब इन कार्यों का महत्व व लाभ समझ चुके हैं. अब तो जोदिका तिर्की अपनी सफलताओं से इस कदर उत्साहित हैं कि गांव के सुपूर्ण विकास के लिए सरकार से कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने की मांग कर रही हैं. उनका मानना है कि बेरोजगारी दूर करने और आयवृद्धि के प्रयासों के जरिये ही गांव का विकास संभव है. वह हर महिला को संगठन से जुड़ने, आगे बढ़कर अपने विकास की राह खुद तलाशने की सलाह देती हैं.

जोदिका तिर्की, पिंडारकोम, नयाटोली, नामकुम
जिला रांची (झारखंड)
संस्था– विकास फाउंडेशन

झारखंड में पैक्स प्रोग्राम के तहत

राह बनाती महिलाएं

प्यारी होरो

अठाइस वर्षीय प्यारी होरो के पास आज अपनी सफलता के रूप में बताने के लिए बहुत सी चीजें हो चुकी हैं. वर्ष 1997 में सामाजिक कार्यों से जुड़ने के बाद से अब तक प्यारी होरो को कभी किसी बड़ी जटिलता का सामना नहीं करना पड़ा. वह पढ़ाई भले ही आठवीं तक ही कर पायी हों किंतु खुशकिस्मत हैं कि सामाजिक कार्यों से जुड़ाव का किसी ने विरोध नहीं किया. उल्टे, पति, देवर, ननद सहित अन्य सदस्यों ने मानसिक, सामाजिक एवं यहां तक कि भौतिक रूप से भी भरपूर सहयोग किया.

प्यारी ने रांची जिले के कर्रा प्रखंड स्थित गांव घोरपिंडा में गठित 'सूरज महिला मंडल' नामक स्वयं सहायता समूह में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हुए महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया. इस दिशा में प्यारी देवी की एक बड़ी सफलता है गांव में ईंट भट्ठे की इकाई लगाना. इससे गांव के करीब तीस–चालीस लोगों को प्रतिदिन एक सौ रुपये की दर से रोजगार मिला तथा गांव से पलायन की समस्या भी दूर हुई. प्यारी देवी ने अपनी ननद का ट्रेक्टर मंगाकर ईंट भट्ठे के काम में उसका उपयोग किया. इसके अलावा भी कई प्रकार की आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिये जाने के कारण अधिकांश महिलाएं स्वरोजगार से जुड़ गयीं. समूह की जिन महिलाओं ने जो भी पूंजी लगायी थी, सबकी पूंजी लौट चुकी है तथा सब किसी न किसी कार्य से जुड़ गयी हैं. प्यारी देवी महसूस करती हैं कि सामाजिक कार्यों से जुड़ने के कारण उनकी पहचान बनी है तथा आत्मविश्वास बढ़ा है. अधिकारियों से वार्ता में अब कोई संकोच नहीं होता. अब प्यारी देवी की योजना एक मुर्गी फॉर्म खोलने की है.

प्यारी देवी की कोशिश यह भी है कि गांव की महिलाओं को स्वर्ण जयंती स्वरोजगार योजना के तहत पूंजी उपलब्ध कराकर मुर्गी पालन, बकरी पालन, शूकर पालन, मशरूम उत्पादन इत्यादि कार्यों को बढ़ावा दे सकें. उन्हें इसके लिए उपयुक्त दिशानिर्देश एवं प्रशिक्षण हेतु उपयुक्त एजेंसी की भी तलाश है. प्यारी देवी ने इन गतिविधियों के जरिये अपने परिवार के साथ ही अन्य महिलाओं की भी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने में सफलता हासिल की है.

प्यारी होरो, गांव– घोरपिंडा
कर्रा, रांची (झारखंड)
संस्था– कर्रा सोसाइटी फॉर रूरल एक्शन

फॉल्डर के बैक पेज के लिए

पैक्स यानि पूअरेस्ट एरियाज सिविल सोसाइटी प्रोग्राम के तहत झारखण्ड के 18 जिलों के 4000 गांवों में निर्धनता–उन्मूलन प्रयास चलाये जा रहे हैं. इसके तहत गरीबों को सशक्त बनाना, स्थानीय समुदायों की क्षमता विकसित करना, बेहतर स्थानीय स्वशासन, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता, नीति पैरवी, स्वयं सहायता इत्यादि प्रमुख है.

झारखंड में पैक्स की उपलब्धियों का पूरा आकलन तत्काल भले ही संभव न हो, सफलताओं की झलकियां तो देखी ही जा सकती हैं.

यहां ऐसी महिलाओं के संघर्ष और प्रयासों की कुछ झलकियां पेश हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व निर्माण से लेकर परिवार, समूह, गांव और समाज के विकास में अनूठे प्रयोग किये हैं.

इन्हीं प्रयोगों पर टिकी हैं उम्मीदें.

इन राह बनाती महिलाओं की विकास यात्रा सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए काफी उत्साहवर्द्धक हैं.